तीसरी इकाई

❑ चित्रों के वाक्यों को समझाएँ । इसी प्रकार के वाक्यों का संग्रह करवाएँ । विद्यार्थियों से उनकी रेल यात्रा, बस यात्रा आदि के अनुभव सुनाने के लिए कहें । प्रत्येक विद्यार्थी को बोलने का अवसर दें । इसी प्रकार के चित्र बनाने के लिए प्रोत्साहित करें ।

● **श्रवण – सुनो और गाओ :**

२. सही समय पर

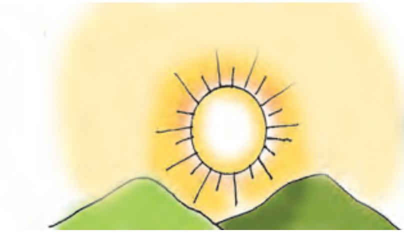

सही समय पर सूरज आता,
सही समय ढल जाता है,
चंदा भी नित समय से आता,
सही समय छिप जाता है ।

पंछी सदा समय पर जगते,
नभ में फिर उड़ जाते हैं,
दूर-दूर तक उड़ कर जाते,
दाना चुग कर लाते हैं ।

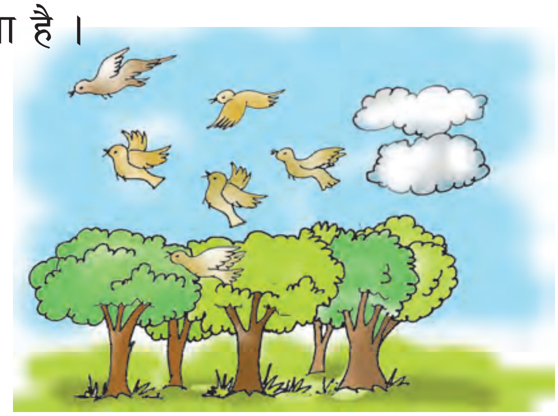

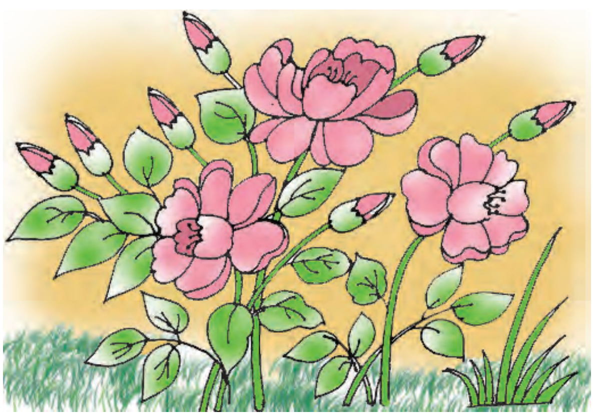

सुबह समय से खिलती कलियाँ,
किरन देख मुसकाती हैं,
संग पवन के झूम-झूमकर,
नित सुगंध फैलाती हैं ।

सही समय पर सोता जगता,
वही स्वस्थ रह पाता है,
अपना काम समय पर करता,
वही सफलता पाता है ।

सही समय पर भोजन करना,
सही समय व्यायाम करो,
सही समय पर करो पढ़ाई,
सही समय विश्राम करो ।

– डॉ. पुष्पारानी गर्ग

❑ कविता का आदर्श पाठ प्रस्तुत करें । विद्यार्थियों से चार-चार पंक्तियों का अनुपाठ कराएँ फिर सामूहिक, गुट, एकल साभिनय पाठ कराएँ । उन्हें अपनी लिखित दिनचर्या बनाने और पालन करने हेतु प्रोत्साहित करें । प्रत्येक की दिनचर्या पर चर्चा कराएँ ।

स्वाध्याय हेतु अध्यापन संकेत – प्रत्येक इकाई के स्वाध्याय में दिए गए 'सुनो', 'पढ़ो' प्रश्नों के लिए सामग्री उपलब्ध कराएँ । यह सुनिश्चित करें कि सभी विद्यार्थी स्वाध्याय नियमित रूप से कर रहे हैं । विद्यार्थियों के स्वाध्याय का 'सतत सर्वंकष मूल्यमापन' भी करते रहें ।

स्वाध्याय

१. दूरदर्शन पर समूह गीत, प्रयाण गीत सुनो ।

२. निम्नलिखित विषयों से संबंधित पाँच शब्द बताओ :

रसोईघर बगीचा पंसारी मेला सरकस ।

३. 'सही समय पर' कविता की एक छोड़कर एक पंक्ति पढ़ो ।

४. उत्तर लिखो :

(च) सूरज कब ढल जाता है ?

(छ) कलियाँ क्या-क्या करती हैं ?

(ज) सफलता कौन पाता है ?

(झ) हमें सही समय पर क्या-क्या करना चाहिए ?

५. चित्रों को देखकर बताओ कि घड़ी में कितने बजे हैं ?

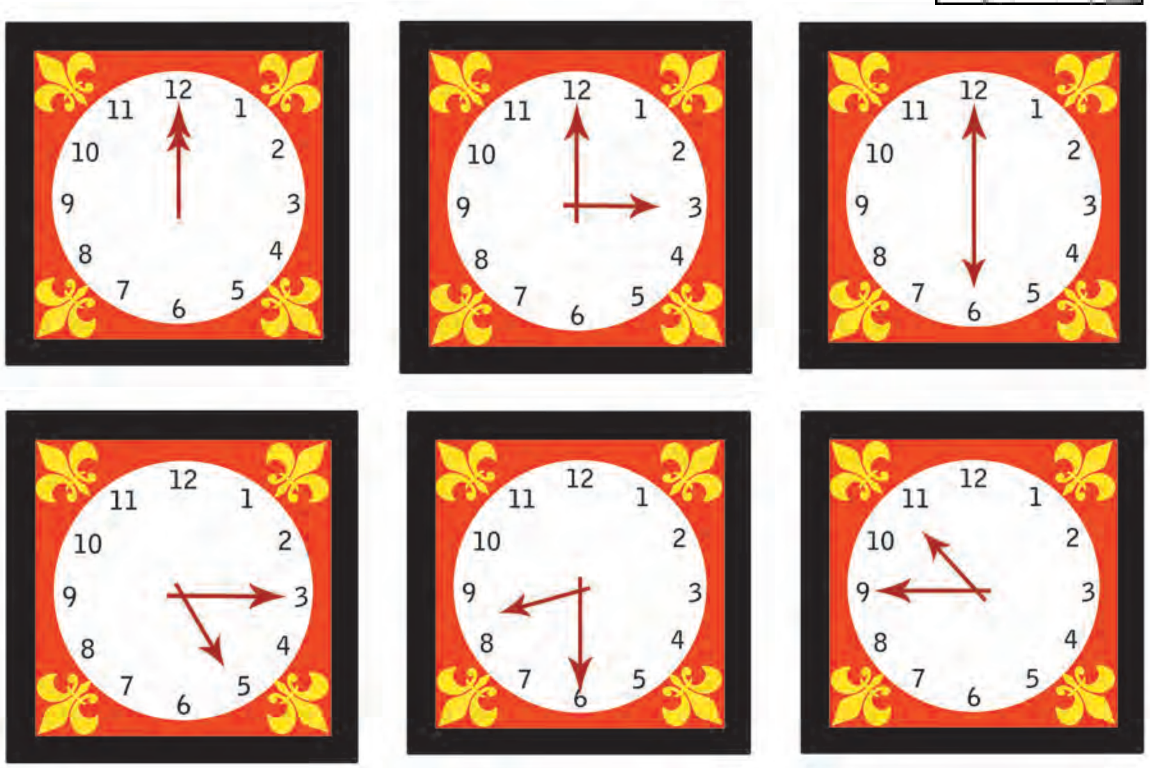

६. 'समय के महत्व' पर चर्चा करो और उसका पालन कैसे करते हो, बताओ ।

● वाचन – पढ़ो और दोहराओ :

३. बच्चे को दूध मिला

एक बच्चा दूध पिए बिना सो गया । बच्चे के लिए माँ ने दूध ढँककर रख दिया था । उसी झोंपड़ी में बिल के भीतर एक चूहा रहता था । वह अपने बिल से बाहर आया । उसकी दौड़-धूप से दूध का बरतन उलट गया । बच्चा जागा और भूख से रोने लगा । घर में दूध नहीं था । चूहा बच्चे की माँ के पास आया और बोला, "मैं अभी दूध लाता हूँ ।"

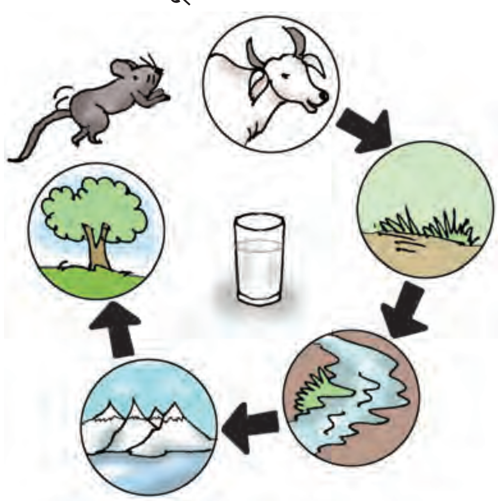

चूहा दौड़ा-दौड़ा गाय के पास गया । बोला, ''गाय, मुझे दूध दो । बच्चा रो रहा है ।'' गाय बोली, ''मुझे घास नहीं मिलती, मैं सूख गई हूँ । घास लाओ, तब दूध दूँगी ।''चूहा दौड़ा घास के मैदान के पास और बोला, ''मैदान, मैदान, घास दो । मैं घास गाय को दूँगा । गाय मुझे दूध देगी, दूध मैं बच्चे को दूँगा । बच्चा हँसने लगेगा ।'' ''कहाँ से दूँ घास, मुझे पानी ही नहीं मिलता । मुझे पानी दो तो मैं तुम्हें घास दूँगा ।''

चूहा दौड़ा-दौड़ा नदी के पास गया । नदी बोली, ''पानी कहाँ से दूँ, मैं तो सूखी पड़ी हूँ । पर्वत से कहो, मुझे पानी दे ।'' चूहा दौड़ा-दौड़ा पर्वत के पास पहुँचा । पर्वत बोला, "आदमी ने हमारे सारे पेड़ काट डाले । पेड़ थे, तो पानी रोकते थे । उनकी जड़ें मिट्टी को बाँधकर रखती थीं । हम कहाँ से पानी दें ?" चूहा बोला, ''मैं बच्चे की ओर से वचन देता हूँ । जब वह बड़ा होगा तो हजार पेड़ लगाएगा और तुम हरे-भरे हो जाओगे ।''

पर्वत ने पानी छोड़ा । नदी भरी । उसने मैदान को पानी दिया । मैदान में घास उगी । गाय को घास मिली । गाय ने दूध दिया । दूध लेकर चूहा झोंपड़ी में पहुँचा । दूध बच्चे को पिलाया । बच्चा हँसने लगा । बड़ा होने पर बच्चे ने पेड़ लगाने का वचन निभाया ।

– विद्‌यानिवास मिश्र

❑ उचित उच्चारण, आरोह-अवरोह के साथ पाठ का वाचन करें । विद्‌यार्थियों से सामूहिक, गुट में मुखर, मौन वाचन कराएँ । वृक्षों के महत्त्व पर चर्चा करें । विद्‌यालय में वृक्षारोपण का कार्यक्रम आयोजित करें । उन्हें वृक्षारोपण और वृक्ष संरक्षण हेतु प्रेरित करें ।

स्वाध्याय

१. **किसी साहसी बालक/ बालिका की कहानी सुनाओ ।**

२. **उत्तर दो :**

(क) बरतन क्यों उलट गया ?

(ख) गाय, चूहे से क्या बोली ?

(ग) पेड़ क्या-क्या करते थे ?

(घ) बच्चे ने कौन-सा वचन निभाया ?

३. **किसी कलाकार की जानकारी पढ़ो ।**

४. **रिक्त स्थान की पूर्ति करो :**

(च) बच्चा .... पिए बिना सो गया ।

(छ) बच्चा जागा और .... से रोने लगा ।

(ज) मुझे .... नहीं मिलती, मैं .... गई हूँ ।

(झ) बड़ा होने पर .... पेड़ लगाने का .... निभाया ।

५. **चित्रों को पहचानो और उनके नाम बताओ :**

६. **सीढ़ियाँ चढ़ते समय फिसलने से एक विद्‌यार्थी को चोट लग गई तो ऐसे में तुम क्या करोगे, बताओ ।**

● **वाचन – पढ़ो और बोलो :**

४. संदर्भ सामग्री कोना

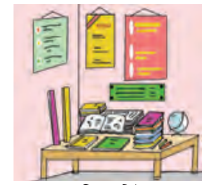

(बच्चे कक्षा की सजावट कर रहे हैं । गुरु जी कक्षा में प्रवेश करते हैं ।)

सभी बच्चे – प्रणाम गुरु जी !

गुरु जी – बच्चो नमस्ते! कक्षा को सजाने के लिए तुम सब क्या-क्या करते हो ?

कर्ण – हम अपनी कक्षा स्वच्छ रखते हैं । दीवारें सजाते हैं । सुविचार लिखते हैं ।

गुरु जी – बिलकुल ठीक । अच्छा ! हम अपनी कक्षा में नया क्या कर सकते हैं ?
(सब बच्चे आपस में खुसर-फुसर करने लगते हैं ।)

अमीना – गुरु जी ! हम अपनी कक्षा में छोटा-सा पुस्तकालय बनाएँ ?

जॉन – इसमें समाचारपत्र, कहानी, कविता, सामान्यज्ञान की पुस्तकें रख सकते हैं ।

अपूर्वा – पंचतंत्र, हितोपदेश, बीरबल, तेनालीराम की पुस्तकें अवश्य रखेंगे ।

कार्तिक – चुटकुले, कारटून, चित्रकथा की पुस्तकें मुझे बहुत प्रिय हैं । इन्हें भी रखेंगे ।

गुरु जी – अरे वाह ! मेरे बच्चे तो बड़े होशियार हैं । इसके अतिरिक्त यहाँ शब्दकोश, समाचारपत्र, हस्तलिखित पत्रिका और तुम्हारे बनाए हुए चित्र, शैक्षणिक सामग्री भी रखेंगे । वर्ष में एक बार इनकी प्रदर्शनी भी लगाएँगे ।

जसवंत कौर– गुरु जी ! पुस्तकालय में शैक्षणिक सामग्री ?

गुरु जी – हम पुस्तकालय की जगह अपनी कक्षा में 'संदर्भ सामग्री कोना' बनाएँगे । तुम सब बारी-बारी से सामग्री घर ले जाकर पढ़ सकते हो । कक्षा में उपयोग कर सकते हो । इस 'संदर्भ कोना' का उद्घाटन मुख्याध्यापक के हाथों से होगा ।

❑ उचित आरोह-अवरोह, उच्चारण के साथ वाचन करें । विद्यार्थियों से मुखर वाचन करवाएँ । कक्षा में 'संदर्भ सामग्री कोना' बनवाएँ । 'संदर्भ सामग्री' का उपयोग करवाएँ । अपने वर्ग की सजावट करवाएँ । नियमित समाचारपत्र वाचन हेतु प्रेरित करें ।

स्वाध्याय

१. **कोई चुटकुला सुनाओ ।**

२. **पाठशाला में 'स्वतंत्रता दिवस' कैसे मनाया गया, बताओ ।**

३. **बीरबल की कहानियाँ पढ़ो ।**

४. **उत्तर लिखो :**

(क) बच्चे अपनी कक्षा सुंदर बनाने के लिए क्या-क्या करते हैं ?

(ख) जॉन ने कौन-कौन-सी पुस्तकें रखने की बात की ?

(ग) अपूर्वा ने किन पुस्तकों के नाम सुझाए ?

(घ) कार्तिक को क्या प्रिय है ?

५. **इनमें से कौन-सी सामग्री तुम्हारी कक्षा के 'संदर्भ कोना' में है, बताओ :**

3YR3RL

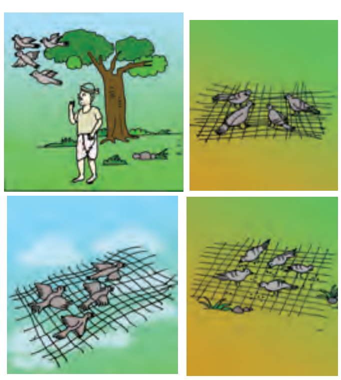

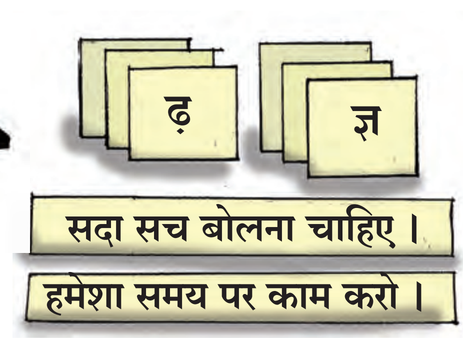

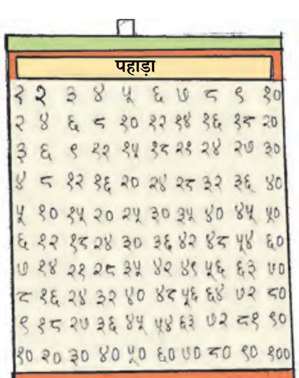

६. **अपने कौन-से काम तुम स्वयं करते हो ?**

● संयुक्ताक्षर – मौन वाचन करो :

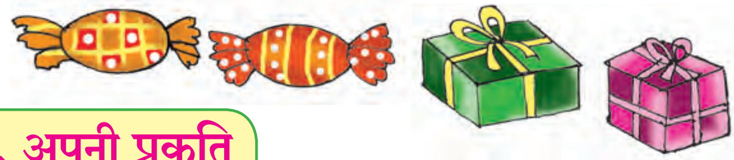

५. अपनी प्रकृति

एक दिन फ्रेड्रिक, हितेंद्र, मुख्तार, प्राजक्ता, सिद्धि, काव्या, शर्मिष्ठा, कृष्णा, बिट्टू, तृप्ति, चिन्मय आपस में बातचीत कर रहे थे । प्राजक्ता ने कहा, "प्रकृति हमें कुछ न कुछ देती ही रहती है । क्यों न इस वर्ष बालदिवस पर हम प्रकृति को कुछ दें ।" सबने मिलकर अपना विचार अपनी मित्र सोनपरी को बताया ।

सोनपरी को बहुत हर्ष हुआ । वह सबको अपने साथ लेकर आकाश में उड़ चली । उसने कहा, ''दोस्तो ! तुम जो कुछ प्रकृति को देना चाहते हो, उसकी कल्पना करो । मैं तुम्हारी हर कल्पना को सुंदर उपहार में बदल दूँगी ।'' फ्रेड्रिक और सिद्धि ने आकाश को अपने खिलौने देने का मन बनाया । सोचते ही खिलौनों ने बादलों का रूप ले लिया ।

❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ पाठ का वाचन करें । विद्यार्थियों से अनुवाचन कराएँ । संयुक्ताक्षरयुक्त शब्दों का विद्यार्थियों से मुखर वाचन कराएँ । बालदिवस के बारे में चर्चा कराएँ । पाठ्यपुस्तक में आए हुए अन्य संयुक्ताक्षरयुक्त शब्दों की सूची बनवाएँ ।

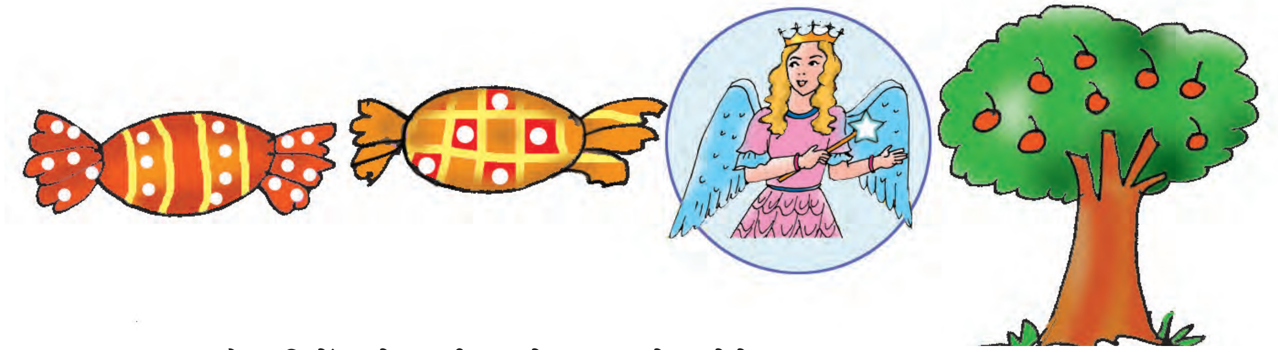

काव्या और हितेंद्र ने पर्वत को चॉकलेट देने की इच्छा व्यक्त की । यह इच्छा शानदार वृक्षों में बदल गई । शर्मिष्ठा एवं कृष्णा पृथ्वी को अपनी चूड़ियाँ पहनाना चाहती थीं । देखते-देखते उनकी चाह हरियाली बनकर पृथ्वी पर खिल गई ।

तृप्ति और चिन्मय ने अपनी-अपनी रंग पेटी आसमान को देने का मन बनाया । कुछ ही क्षणों में सारा आसमान कई रंगों की छटाओं से भर गया ।

तुरंत आसमान टिमटिमाते तारों से भर गया । सचमुच सभी बच्चों और परी ने मिलकर प्रकृति को अद्‌भुत बना दिया ।

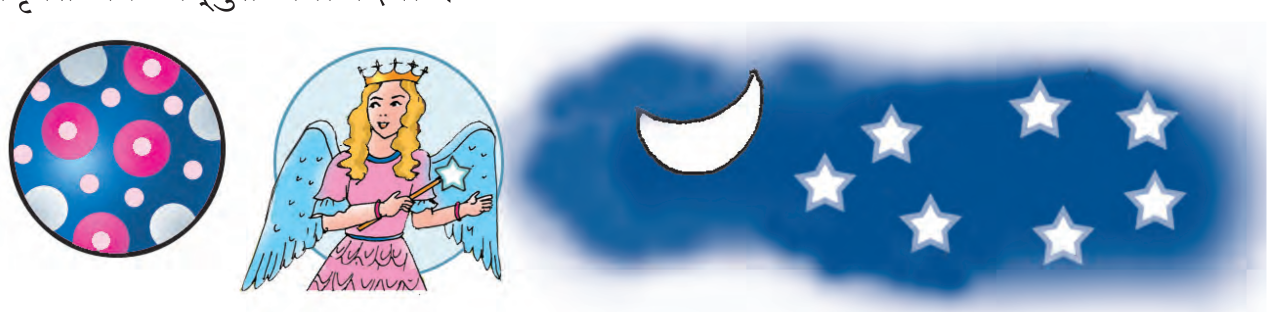

एकाएक प्राजक्ता की नींद खुल गई । उसने खिड़की से बाहर झाँका तो पाया कि प्रकृति वैसी ही दिख रही है जैसी उसने अभी-अभी सपने में देखी थी ।

❑ क्ष, त्र, ज्ञ, श्र से बनने वाले संयुक्ताक्षर शब्द लिखवाएँ । र के तीनों प्रकारों (ˊ, ɹ, ‸) के पाँच-पाँच शब्द कहलवाएँ । अपनी कक्षा में संयुक्ताक्षरयुक्त नामवाले लड़के-लड़कियों के नामों का वाक्यों में प्रयोग करके लिखने के लिए कहें ।

● **व्याकरण – समझो और लिखो :**

६. अहंकार

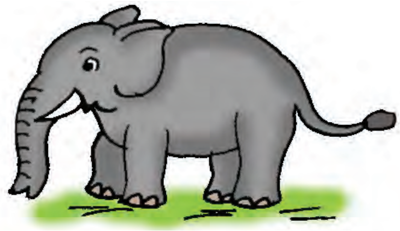

"अरी ओ चंपा ! तू मेरे आगे क्यों चल रही है ? जानती नहीं मैं मनहर हूँ !" मनहर हाथी गुस्से से चिंघाड़ा । "मनहर जी नमस्ते! क्या आपको नहीं मालूम कि–

यह रास्ता न आपका है; न मेरा,

***सभी एक समान हैं, जागो हुआ सवेरा ।*"** कहकर चंपा चींटी मुसकराई ।

"रुक, अभी मजा चखाता हूँ," हाथी बोला । उसने चींटी पर पैर रखना चाहा पर वह मिट्‌टी में छिप गई । हाथी ने समझा कि चींटी का काम तमाम हो गया । वह खुशी से गरदन हिलाता चल पड़ा । तभी चींटी बाहर आकर बोली, "मनहर भाई, नमस्ते !"

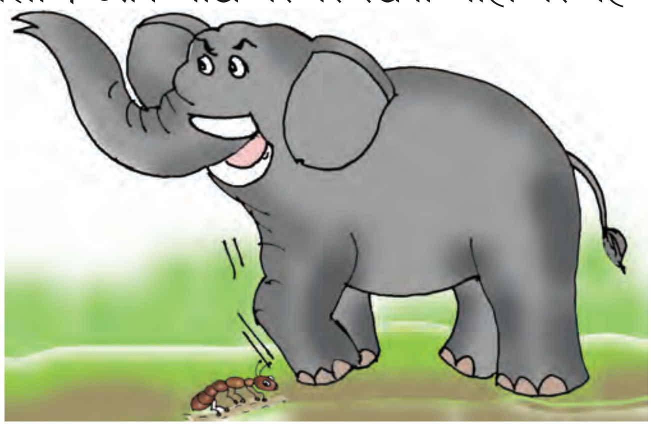

"अरे तू कहाँ से आ रही है !" हाथी तिलमिलाया ।

"आपके पैर के तलवे से," चींटी ने जवाब दिया और लता पर जा बैठी । फिर क्या था, हाथी का गुस्सा और बढ़ गया । पास के नाले से उसने सूँड़ में पानी भरा और चींटी पर जोर से उछाला । चींटी लता के बड़े पत्ते के पीछे छिप गई । थोड़ी देर बाद सामने आकर बोली, "मनहर जी नमस्ते !"

❑ उचित उच्चारण, आरोह-अवरोह के साथ पाठ का वाचन करें । कहानी से मिलने वाली सीख पर चर्चा करें । पढ़े हुए विरामचिह्नों का लेखन द्‌वारा दृढ़ीकरण कराएँ । अर्धविराम (;) योजक (-) निर्देशक (–) विरामचिह्नों को समझाएँ । इनके प्रयोग पर बल दें ।

अब तो हाथी गुस्से से पागल हो उठा । उसने पैर उठाया तभी चींटी सामने की झाड़ी में घुस गई । उसको मारने के लिए हाथी ने झाड़ी पर धम्म से पैर पटक दिया और चिल्लाकर कहा, "अब तू कैसे बचेगी चंपा ?"

फुनगी पर लगे फूल में छिपी चींटी बाहर आकर बोली, "नमस्ते !" वह फिर अपने रास्ते चल पड़ी । क्रोध में हाथी ने दो-तीन बार कँटीली झाड़ी पर पैर पटका । उसके पैर से खून बहने लगा ।

XYVV4Q

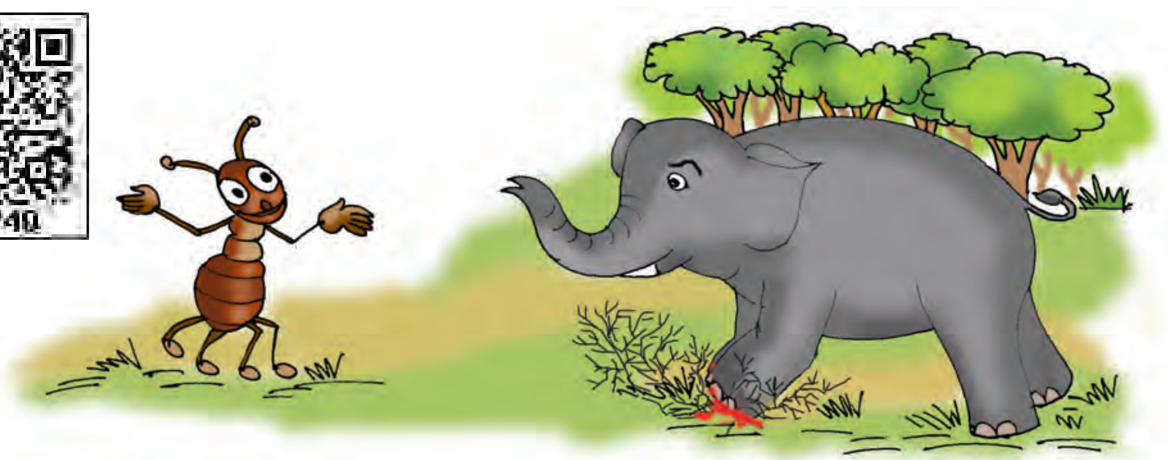

पेड़ पर बैठी मैना सब देख रही थी । बोल पड़ी-

"घमंड नहीं किसी का अच्छा, बड़ा हो चाहे छोटा,

नीचा होता सिर अहंकारी का, मान लो मोटी-मोटा ।"

उसकी बात सुनकर मनहर हाथी ने चंपा चींटी से क्षमा माँगी ।

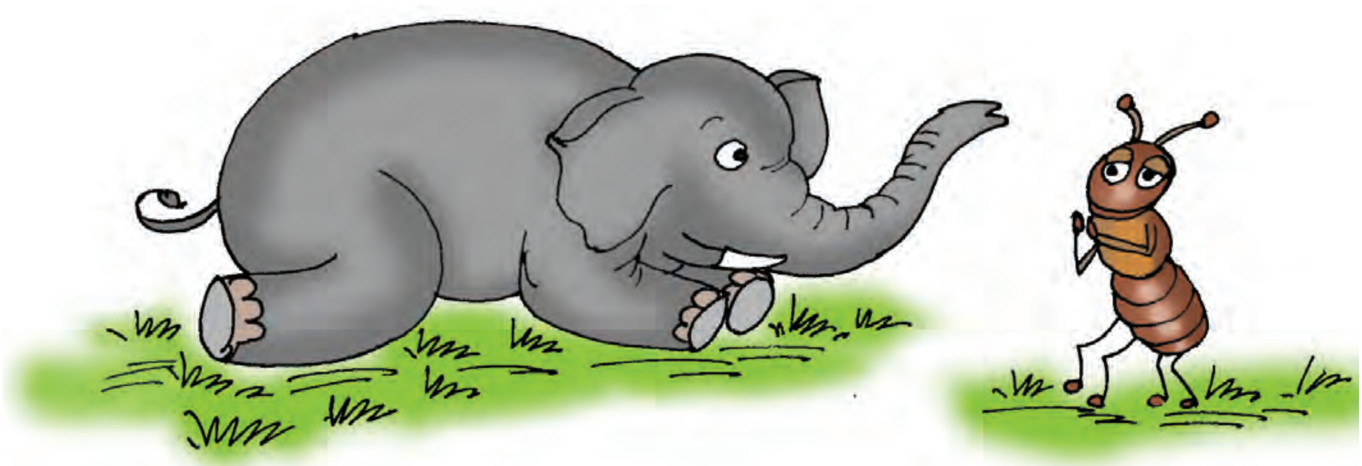

- पूर्णविराम, अर्धविराम, अल्पविराम, प्रश्नवाचक, विस्मयादिबोधक विरामचिह्नों का बार-बार वाचन और लेखन द्‌वारा अभ्यास करवाएँ । किसी परिच्छेद का विरामचिह्नों सहित वाचन कराएँ । विरामचिह्नों के प्रयोग एवं लेखन का अभ्यास करवाएँ ।

● **आकलन – पढ़ो, समझो और लिखो :**

७. पहेली बूझो

बूझो भैया एक पहेली
जब भी छीलो नई नवेली ।

एक था राजा
राजा की रानी
दुम के सहारे
रानी पीती पानी ।

अगर नाक पर चढ़ जाऊँ
कान पकड़कर तुम्हें पढ़ाऊँ ।

काली-काली माँ
लाल-लाल बच्चे ।
जिधर जाए माँ
उधर जाएँ बच्चे ।

एक फूल रंग-बिरंगा
बारिश में सदा सुखाए
तेज धूप में खिल जाता
पर छाया में मुरझाए ।

कटूँ मैं, मरूँ मैं
रोओ तुम, क्या करूँ मैं ?

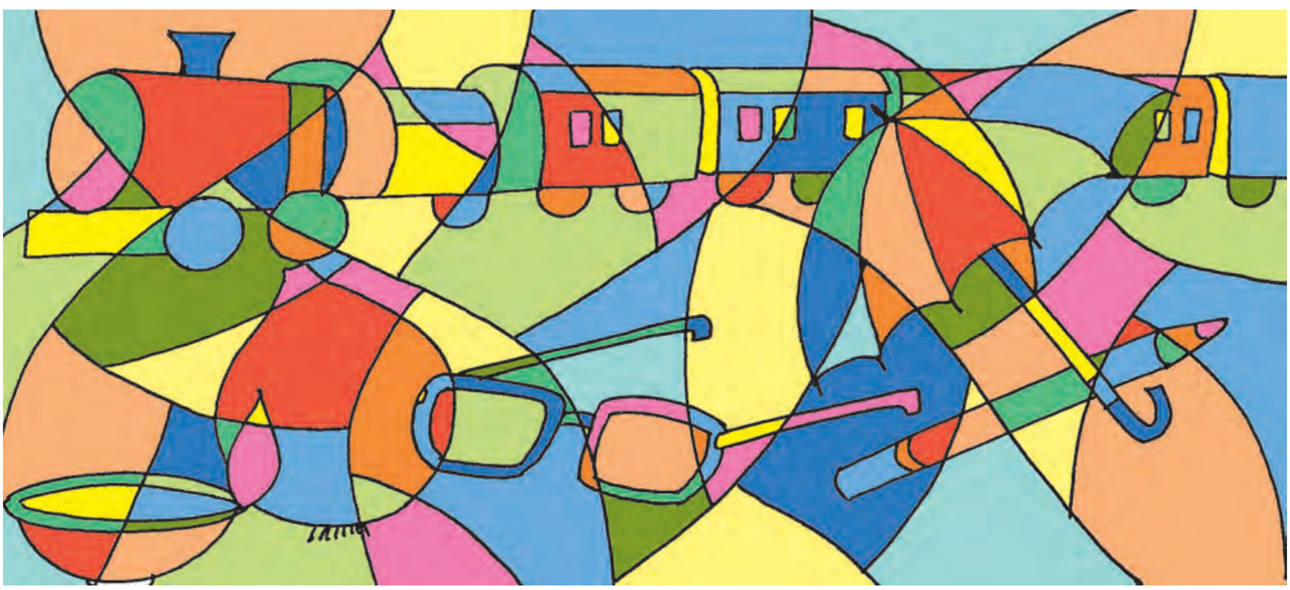

❑ पहेली का हल दी गई चौखट में लिखवाएँ । विद्यार्थियों के गुट बनाकर अन्य पहेलियाँ कहने और बूझने की कृति कक्षा में कराएँ ।

● चित्रवर्णन – पढ़ो, समझो और लिखो :

८. एकता

१

२

३

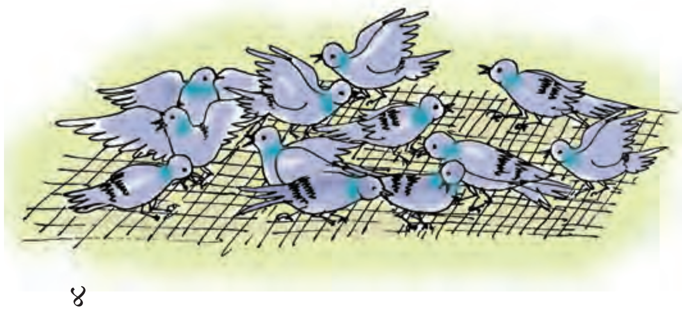

४

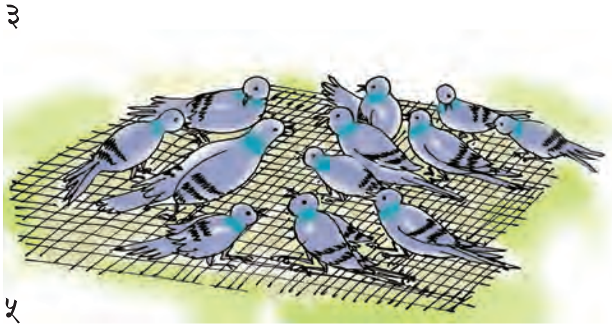

५

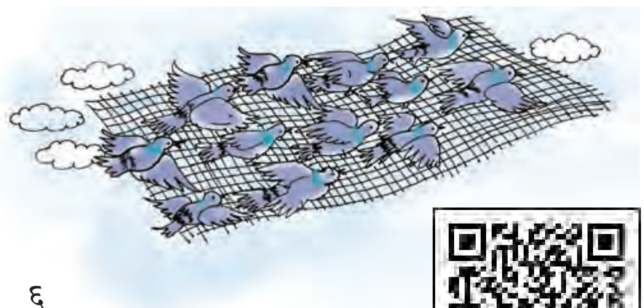

६

७

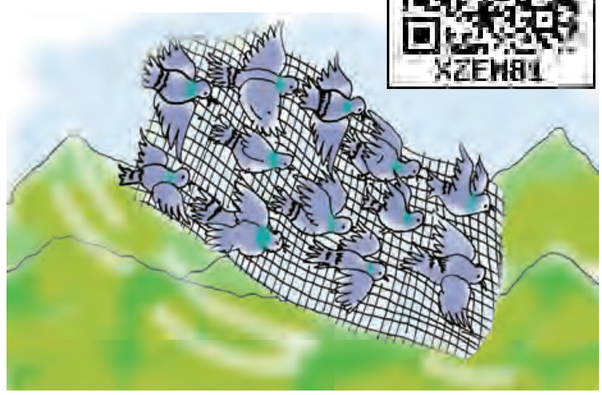

८

९

१०

❑ चित्रों का निरीक्षण कराएँ । जाल किसने काटा होगा, सोचकर खाली जगह पर चित्र बनवाएँ । चित्रवाचन के आधार पर कहानी लिखवाएँ । एकता के बल पर संकट दूर किया जा सकता है, समझाएँ । इसी प्रकार की अन्य चित्रकथा के लेखन का अभ्यास कराएँ ।

● पत्र – पढ़ो, समझो और लिखो :

९. पिता का पत्र, पुत्री के नाम

प्रिय इंदिरा,

जन्मदिन पर तुम्हें कई उपहार मिलते रहे हैं । शुभकामनाएँ भी दी जाती हैं पर मैं इस जेल में बैठा तुम्हें क्या उपहार भेज सकता हूँ ? हाँ, मेरी शुभकामनाएँ सदा तुम्हारे साथ रहेंगी ।

आज-कल बापूजी ने भारतवासियों के दुखों को दूर करने के लिए आंदोलन छेड़ा है । मैं और तुम बहुत ही भाग्यशाली हैं कि यह महान आंदोलन हमारी आँखों के सामने हो रहा है और हम भी इसमें कुछ भाग ले रहे हैं ।

अब सोचना यह है कि इस महान आंदोलन में हमारा कर्तव्य क्या है, इसमें हम किस तरह भाग लें, यह निश्चय करना कोई सरल कार्य नहीं है । जब भी तुम्हें ऐसा संदेह हो तो ठीक बात का निश्चय करने के लिए मैं तुम्हें एक छोटा-सा उपाय बताता हूँ । तुम कोई भी ऐसा काम न करना, जिसे दूसरों से छिपाने की आवश्यकता पड़े । बहादुर बनो, सब कुछ स्वयं ही ठीक हो जाएगा ।

तुम्हें यह तो मालूम ही है कि बापूजी के नेतृत्व में स्वतंत्रता का जो आंदोलन चलाया जा रहा है उसमें छिपाकर रखने जैसी कोई बात नहीं है । हम तो सभी काम दिन के उजाले में करते हैं । भारत की सेवा के लिए बहादुर सिपाही बनो, यही मेरी शुभकामना है ।

अच्छा बेटी, अब विदा !

तुम्हारा पिता,
जवाहरलाल नेहरू

❑ पत्र का अनुवाचन करवाएँ । विद्यार्थियों को एक-दूसरे से पाठ्यांश का श्रुतलेखन करने के लिए कहें । पोस्टकार्ड पत्र लिखने के लिए प्रोत्साहित करें । महान व्यक्तियों के लिखे हुए पत्र विद्यार्थियों को उपलब्ध करवाकर पढ़ने के लिए प्रेरित करें ।

स्वाध्याय

१. 'श्याम की माँ ' (श्यामची आई) पुस्तक से कोई कहानी सुनो ।

२. निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलकर बताओ :

तोता, सेब, लड़की, पाठशाला, रबड़, रुपये, जोकर, आँख, घर, कपड़ा, पेन्सिल ।

३. पढ़ो और समझो :

डोर, ढोर, डफली, लड़की, ढोलक, अनपढ़, ढाल, डाल, कड़ाही, कढ़ाई, कढ़ी, कड़ी ।

४. उत्तर लिखो :

(क) नेहरू जी ने कहाँ से पत्र लिखा ?

(ख) बापूजी ने किसलिए आंदोलन छेड़ा है ?

(ग) नेहरू जी ने इंदिरा को कौन-सा उपाय बताया ?

(घ) जवाहरलाल नेहरू जी ने क्या शुभकामना दी ?

५. चित्रों को पहचानकर नाम बताओ :

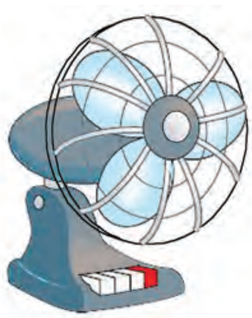

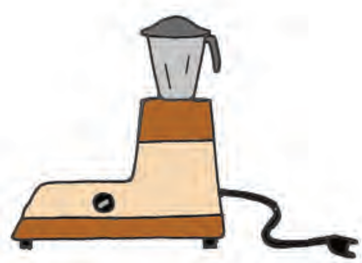

६. तुम्हारे द्‌वारा बनाए गए घरौंदे को किसी ने तोड़ दिया तो तुम क्या करोगे ?

● व्यावहारिक सृजन – देखो, समझो और लिखो :

१०. आओ कुछ सीखें

पिछले सप्ताह कौशल्या ने बताया था कि उसके मामा श्रीनाथ जी ठप्पों से कपड़ों पर छपाई करते हैं । फिर क्या था ! उपेंद्र, ज्ञानेश, आर्या, श्वेता, उर्वशी सभी कौशल्या को साथ लेकर मामा श्रीनाथ जी के घर पहुँच गए । वहाँ पहुँचकर उन्होंने देखा कि मामा जी के हाथ में एक ठप्पा है । वे कपड़े पर ठप-ठप ठप्पा लगाते जा रहे हैं और सुंदर छाप कपड़े पर बनती जा रही है । सभी बच्चों ने उन्हें नमस्ते कहा । उपेंद्र ने पूछा, 'मामा जी आप इतनी सुंदर छाप कैसे बनाते हैं ?' मामा जी ने कहा, "बहुत आसान है । तुम खुद भी छाप बना सकते हो ।" फिर मामा जी ने अपने खेत से कुछ भिंडियाँ और घर से कुछ कोरे कागज मँगवाए । भिंडियों के दो-दो टुकड़े और एक-एक कागज देकर बोले, "तुम सब भिंडी के टुकड़े हाथ में लेकर रंग में धीरे-से डुबाओ फिर अपने कागज पर धीरे-से ठप्पा लगाओ ।" बच्चों ने वैसा ही किया । अरे यह क्या ? सुंदर-सी छाप कागज पर पड़ गई । बच्चों ने बार-बार वैसा किया और सुंदर-सुंदर छाप बनती गई । मामा जी बोले, "इसी तरह अपनी कॉपी में समान अंतर पर रेखाएँ खींचकर उनके बीच रंगीन ठप्पा लगाते हुए साड़ी का सुंदर किनारा तैयार कर सकते हो । यही नहीं, तुम आलू के दो टुकड़ों पर उल्टे अक्षरों के ठप्पे बनाकर उन्हें रंग में डुबोकर अपनी कॉपी पर लगाओगे तो वर्णों की सुंदर छाप बनती जाएगी ।"

बच्चों को बड़ा संतोष था कि आज वे कुछ नया सीखे । उन्होंने तय किया कि वे सब घर जाकर यह प्रयोग करेंगे और कल पाठशाला में कक्षा के शेष विद्‌यार्थियों को सिखाएँगे ।

❑ उचित उच्चारण, आरोह-अवरोह के साथ वाचन करें । विद्‌यार्थियों से मुखर, मौन वाचन कराएँ । ठप्पों द्‌वारा कागज पर साड़ी की किनारी बनाने के लिए प्रेरित करें । ठप्पा लगाने की प्रक्रिया समझाएँ । किन-किन चीजों के ठप्पे बन सकते हैं, चर्चा करें और बताएँ ।

स्वाध्याय

१. अंकुरित अनाज से सूखी भेल बनाने की विधि सुनाओ ।

२. तुम भोजन में क्या-क्या खाते हो, बताओ ।

३. सूचना, अनुरोध, आदेश के वाक्य पढ़ो और समझो :

(क) फूल-पत्तियों को हाथ लगाना मना है ।

(ख) सड़क पार करते समय अपने दाएँ-बाएँ देखकर चलें ।

(ग) संदीप ! पंखे का बटन बंद करो ।

(घ) पुस्तकालय में कृपया शांति बनाए रखें ।

४. कोष्ठक में से उचित शब्द चुनकर सही वाक्य लिखो :

(च) मामा जी के ...... में एक ठप्पा है । (पास/हाथ)

(छ) वे कपड़े पर ठप-ठप ...... लगाते जा रहे हैं । (ठप्पा/छाप)

(ज) तुम खुद भी ...... बना सकते हो । (ठप्पा/छाप)

(झ) मामा जी ने कहा, “बहुत ...... है ।” (आसान/कठिन)

५. चित्र पहचानो और नाम बताओ । इस प्रकार के पत्ते अपनी कॉपी में चिपकाओ :

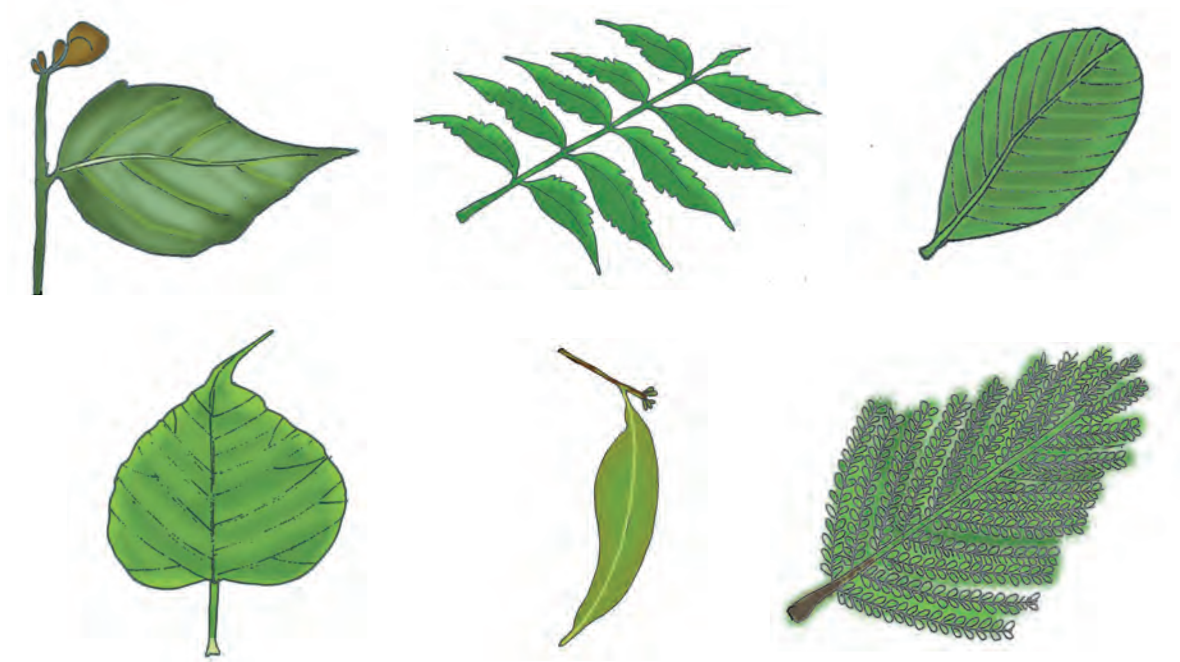

६. तुम कहीं जा रहे हो । तुम देखते हो कि तुम्हारे मित्र/ सहेली की दादी जी दोनों हाथों में भारी थैला उठाए उसी रास्ते से जा रही हैं । इस स्थिति में तुम क्या करोगे, बताओ ।

५९ C M Y K

✻ पुनरावर्तन ✻

✻ बिंदुओं पर १ से १०० तक के अंक लिखकर मिलाओ :

✻ पुनरावर्तन ✻

१. अ से ऑ तक के वर्ण सुनो ।

२. अपने पड़ोसियों का परिचय विस्तार से दो ।

३. जातक कथाएँ पढ़ो ।

४. संयुक्ताक्षरयुक्त शब्द सुधार कर लिखो :

आर्दश, प्रथ्वी, वाषिक, ग्रहकार्य, मुकत, विदया, पयाज, रफतार, स्याम, लक्षमण, कुता ।

५. अक्षर समूह में से महान महिलाओं के नाम बताओ और लिखो :

मा	र	वी	ता	जी	ई	बा	जा	
ल	नी	रा	ई	बा	क्ष्मी			
ल्या	हि	अ	हो	ई	बा	र	क	ल
धा	न्ना	प	य					
बा	नं	दी	आ	शी	जो	ई		

उपक्रम

अपने बारे में भाई/बहन से सुनो ।	अपने मित्र/सहेली की अच्छी आदतें बताओ ।	पुस्तकालय से पुस्तक लेकर पढ़ो ।	खट्टे पदार्थों की सूची बनाओ ।

६१ CMYK

• चित्रवाचन – देखो, बताओ और कृति करो :

१. डाकघर और बैंक

❑ विद्‌यार्थियों से चित्रों का निरीक्षण करवाकर चर्चा कराएँ एवं उनको प्रश्न पूछने के लिए कहें । उन्हें डाकघर में जाकर टिकट खरीदने तथा बैंक में बड़ों की सहायता से बाल-बचत-खाता खोलने के लिए प्रेरित करें । इससे संबंधित उनका अपना अनुभव पूछें ।